**E-ISSN:** 2583-9667
**Indexed Journal**
**Peer Reviewed Journal**
https://multiresearchjournal.theviews.in

**Received: 10-05-2025**
**Accepted: 17-06-2025**
**Published: 19-07-2025**

**INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCE RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY**

**Volume 3; Issue 3; 2025; Page No. 406-410**

# सीधी जिले में अनुसूचित जनजातियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर शोध

**[1]सौरभ सिंह बघेल, [2]भानु साहू**

[1, 2]वाणिज्य विभाग, मध्यांचल प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत

**DOI:** https://doi.org/10.5281/zenodo.19204465

**Corresponding Author:** सौरभ सिंह बघेल

**सारांश**

भारत का जीवंत लोकतंत्र उसके विविध समुदायों की भागीदारी से आकार लेता है, जिनमें जनजातीय आबादी एक विशिष्ट सामाजिक-राजनीतिक पहचान रखती है। यह अध्ययन मध्य प्रदेश की आर्थिक स्थिति में जनजातीय समुदायों की महत्वपूर्ण भूमिका की जाँच करता है, विशेष रूप से सीधी जिले पर ध्यान केंद्रित करते हुए। 27.8% आबादी अनुसूचित जनजातियों की होने के कारण, सीधी जनजातीय आर्थिक योगदान को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण केस स्टडी का प्रतिनिधित्व करता है। यह शोध आदिवासी राजनीतिक चेतना के विकसित होते स्वरूप में महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जो भारत में लोकतांत्रिक समावेशन की व्यापक समझ में योगदान देता है।

**मूल शब्दः** जनजातियों, सामाजिक, आर्थिक, आदिवासी और परिवार

## प्रस्तावना

"आदिवासी" या आदिवासी शब्द हमारे दिमाग में अर्धनग्न पुरुषों और महिलाओं की तस्वीर लाता है, उनके हाथों में तीर और भाले, सिर में पंख होते हैं, और वे एक अस्पष्ट भाषा बोलते हैं। जब दुनिया के अधिकांश समुदाय दुनिया की "प्रगति" के साथ तालमेल रखने के लिए अपनी जीवनशैली को बहुत तेज़ी से बदलते रहे, तब भी ऐसे समुदाय थे जो अपने पारंपरिक मूल्यों, रीति-रिवाजों और विश्वासों के अनुरूप रह रहे थे, जहाँ वे प्रकृति और अपने अप्रदूषित पर्यावरण के साथ शांति से रह सकते थे। मुख्यधारा की दुनिया, तथाकथित सभ्य लोगों ने इन समुदायों को विभिन्न नामों से मूल निवासी, असभ्य लोग, आदिवासी, आदिवासी, मूल निवासी और संपर्कविहीन लोग आदि के रूप में ब्रांड किया। भारत में, हम उन्हें ज्यादातर आदिवासी/गिरिजन के रूप में संदर्भित करते हैं। आदिवासी समुदाय कई समस्याओं का सामना कर रहे हैं

"जनजाति में परिवारों का एक समूह शामिल होता है जो रिश्तेदारी से एक साथ बंधे होते हैं, आमतौर पर वंशजों द्वारा। एक सामान्य पौराणिक या पौराणिक पूर्वज से और जो एक सामान्य क्षेत्र में रहते हैं, एक सामान्य बोली बोलते हैं, और एक सामान्य इतिहास रखते हैं"

भारत जनजातीय बहुलता वाले कुछ देशों में से एक है और ऐसा भी कहा जाता है कि यहाँ सबसे बड़ी जनजातीय आबादी है। जनजातीय संस्कृति भारत के एकांत ऊंचे इलाकों और जंगलों में फलती-फूलती है। आदिवासी भारतीय आबादी का अभिन्न अंग हैं। उनकी पृथक पारिस्थितिकी, अर्थव्यवस्था, समाज, धार्मिक विश्वास और भारतीय समाज के साथ सदियों पुराना जुड़ाव है। आदिवासियों का अध्ययन मानवशास्त्रीय सरोकारों में सबसे पुराने में से एक रहा है। वास्तव में, मानवशास्त्र की उत्पत्ति भारत में पाए जाने वाले मूल लोगों के जीवन के तरीकों को समझने और उनका वर्णन करने में देखी जा सकती है। इन जंगलों और पहाड़ों में रहने वाले असभ्य लोगों को अन्य सभ्य लोगों से अलग करने के लिए जनजाति कहा जाता था।

भारत में आदिवासी भारतीय समाज की व्यापक बहुरंगी प्रकृति को दर्शाते हैं, जो एक ओर प्राचीन परंपराओं में निहित है, वहीं दूसरी ओर आधुनिकीकरण की शक्तियां मिलकर काम कर रही हैं। यद्यपि आदिवासी समाज आज भी सदियों पुराने रीति-रिवाजों, सामंतवाद और आधुनिक सहभागिता की प्रक्रिया में निहित है, फिर भी समानता का सिद्धांत बरकरार है। सहभागितापूर्ण संस्थाओं की प्रभावशीलता पुनर्वितरण और समतावाद का आधार प्रदान करती है, जो आदिवासी समाज की विशेषता है। भारत की आदिवासी संस्कृति धीरे-धीरे लेकिन निरंतर राष्ट्रीय संस्कृति की मुख्यधारा में अपना स्थान बनाने के लिए खुद को ढाल रही है।

## साहित्य की समीक्षा

गांधी, मकाला. (2024) [1]. भारत में जनजातीय समूहों का विकास दीर्घकाल से स्वतंत्र भारत के महत्वपूर्ण उद्देश्यों में से एक रहा है। यह संबंधित जनजातीय समूहों के व्यक्तियों की सामाजिक-

आर्थिक और राजनीतिक प्रगति और कल्याण को दर्शाता है। यह प्रगति उन सभी लोगों की भलाई के लिए होनी चाहिए जिन्हें आमतौर पर कमजोर और सामाजिक रूप से पिछड़ा माना जाता है। प्रस्तुत लेख जनजातीय लोगों के विकास के प्रति सरकार के दृष्टिकोण पर केंद्रित है, जिसमें यह भी शामिल है कि कैसे नीतियां और निर्णय विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच गहरे मतभेदों को कम करते हैं और असमानताओं को कम करते हैं। इस पत्र का मुख्य उद्देश्य आर्थिक विकास को प्रभावित करने वाले कारकों और भविष्य में विशिष्ट रणनीति के माध्यम से आर्थिक सहायता को लम्बा खींचने के तरीकों और साधनों का पता लगाना है। कार्यप्रणाली: इस पत्र का उद्देश्य लक्षित जनजातीय समूहों के आर्थिक विकास में योगदान देने वाले या बाधा डालने वाले प्रमुख कारकों की पहचान करना है। परिणामों के लिए विभिन्न परीक्षण उपकरणों का उपयोग करके अध्ययन का विश्लेषण किया गया।

मोंडल, तापस. (2024).यह शोधपत्र मुख्यतः बर्धमान शहर के कुछ चुनिंदा इलाकों में जनजातीय लोगों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर केंद्रित है। जनजातियाँ हमारे समाज के मूल निवासी हैं। आधुनिक जीवनशैली जनजातीय जीवन को प्रभावित कर रही है। अधिकांश घरेलू व्यवसाय राजमिस्त्री, बढ़ई, निर्माण श्रमिक, सब्जी विक्रेता आदि हैं इस शोध का उद्देश्य बर्धमान शहर में इन समुदायों के रहन-सहन, शिक्षा तक पहुँच, स्वास्थ्य सेवा और रोज़गार के अवसरों को समझना है। अध्ययन क्षेत्र में जनजातीय परिवारों की सामाजिक-आर्थिक स्थितियों की तुलना करना और उनकी वर्तमान स्थितियों का अध्ययन करना है। यह अध्ययन इस समुदाय की सामाजिक-आर्थिक स्थिति और उनकी आजीविका को बनाए रखने में आने वाली समस्याओं की जाँच करता है। यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि जनजातीय समाज की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को कैसे सुधारा जा सकता है।

अनुसूचित जनजाति अपने मूल स्थान के सबसे पुराने निवासी हैं। आर्थिक और तकनीकी रूप से, वे अभी भी पिछड़े हैं। उनकी भाषा, संस्कृति, विश्वास और रीति-रिवाज अलग हैं। भारत में 427 मुख्य जनजातीय समुदाय रहते हैं और तमिलनाडु में 36 हैं। तमिलनाडु में, अधिकांश जनजातियाँ निरक्षरता, अज्ञानता से ग्रस्त थीं। सरकारी कल्याणकारी योजनाओं के बारे में उचित जागरूकता नहीं है। वे रहने के क्षेत्र और व्यावसायिक क्षेत्र में अपनी मुख्यधारा के वर्चस्व, शोषण और नियंत्रण में हैं। इस संदर्भ में यह पत्र भारत, 2013 और अन्य शोध अध्ययनों पर आधारित है और अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए क्रॉस-वर्गीकरण विश्लेषण करता है। तमिलनाडु में अधिकांश आदिवासी लोग गरीबी रेखा से नीचे रहते हैं। अध्ययन के परिणाम से पता चलता है कि वर्तमान स्थिति में तमिलनाडु के आदिवासी लोगों की शैक्षिक, रोजगार और आर्थिक स्थिति बहुत खराब है इसलिए, जनजातीय लोगों के लिए सामाजिक और आर्थिक न्याय सुनिश्चित करना राज्य का कर्तव्य है।

पांडा, शांतनु और चक्रवर्ती, शंभू और घोष, डॉ. जयंत। (2019) [2]। दुनिया भर के लगभग सभी न्यायालयों में मूल निवासियों और जनजातीय अधिकारों की हमेशा उपेक्षा की गई है। हालाँकि, ILO 169 द्वारा किए गए बदलाव के साथ पिछले कुछ दशकों में अंतर्राष्ट्रीय आंदोलन ने गति पकड़ी है। इसके बाद, मूल निवासी आंदोलन UNDRIPS के साथ एक महत्वपूर्ण स्तर पर पहुँच गया। कन्वेंशन संख्या 169 के तीस साल बाद, केवल 23 देशों ने इस कन्वेंशन का अनुसमर्थन किया है। अधिकांश हस्ताक्षरकर्ता देशों की तरह, भारत ने भी इस कन्वेंशन का अनुसमर्थन नहीं किया है और अभी भी पुराने ILO 107 के साथ चल रहा है, जिसकी ऐतिहासिक भूल के रूप में आलोचना की गई थी। अधिकांश देशों की तरह भारत भी UPR प्रस्तुत करने के लिए बाध्य है, लेकिन दुर्भाग्य से किसी भी UPR में भारत में जनजातीय समुदायों की स्थिति पर विस्तार से चर्चा नहीं की गई है। यह शोध पश्चिम बंगाल में जनजातीय लोगों के सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य का अध्ययन करता है। कर्मचारियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, एनजीओ पेशेवरों की कुछ धारणाएँ बनाई गई हैं और विकास योजनाओं और आजीविका के बेहतर कार्यान्वयन के लिए सिफारिशों की एक श्रृंखला इस प्रकार है।

बास्की, सुनील (2016) [3]. यह पत्र पश्चिम बंगाल के बर्दवान जिले के छह उपविभागों में चयनित क्षेत्रों में किए गए सर्वेक्षण के परिणामों का विवरण देता है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य जिले में जनजातीय लोगों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को जानना और उसकी तुलना करना था। पूरी आबादी से नमूना चुनने के लिए उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण का उपयोग किया गया था। अध्ययन के लिए 766 नमूनों के उत्तरदाताओं का चयन किया गया था। अध्ययन के लिए इस्तेमाल किए गए उपकरण प्रश्नावली और एक साक्षात्कार अनुसूची थे। एकत्रित डेटा को सारणीकरण चार्ट और ग्राफिकल अभ्यावेदन का उपयोग करके संसाधित किया गया था। अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष यह थे कि बर्दवान सदर (दक्षिण) उपविभाग में अनुसूचित जनजाति के लोगों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति सबसे अधिक है; जबकि कटवा उपविभाग में यह प्रवृत्ति सबसे कम है। यह देखा गया है कि दो उपविभागों में अनुसूचित जनजाति के लोगों की औसत सामाजिक-आर्थिक स्थिति औसत से ऊपर है।

## अनुसंधान क्रियाविधि

प्रस्तावित अध्ययन मूलतः अनुभवजन्य प्रकृति का है, जो प्राथमिक और द्वितीयक दोनों स्रोतों पर आधारित है। यह अध्ययन गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों प्रकृति का है। इसलिए, इसे गुणात्मक और मात्रात्मक अनुसंधान के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। यह शोध डिज़ाइन सीधी जिले में जनजातीय आर्थिक भागीदारी की जटिल गतिशीलता को समझने के लिए एक खोजपूर्ण ढाँचे का अनुसरण करता है। यह प्रकाशित पुस्तकों, शोध पत्रिकाओं के लेखों, अप्रकाशित शोध-प्रबंधों और विभिन्न प्रासंगिक वेब स्रोतों पर आधारित है। अनुभवजन्य समर्थन के लिए, सीधी जिले के चाय बागानों में अनुसूचित जनजाति समुदायों के परिवारों का चयन किया गया है और आदिवासी परिवारों के 200x300 के प्रतिनिधि नमूने से उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति का पता लगाने के लिए प्रासंगिक आँकड़े एकत्र किए गए हैं। अध्ययन के लिए डेटा संग्रह पायलट सर्वेक्षण से शुरू होता है और 2015 के पूरे वर्ष के लिए फील्डवर्क किया गया था।

उत्तर-औपनिवेशिक काल में, देश ने अपने नागरिकों के जीवन स्तर में सुधार के लिए योजनाबद्ध विकास की एक पद्धति अपनाई और इस परिवर्तन को विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के कार्यान्वयन के माध्यम से प्राप्त करने का प्रयास किया गया (आठवीं पंचवर्षीय योजना रिपोर्ट, 1990-95)। इस संदर्भ में, लोगों के सामाजिक-आर्थिक जीवन, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों के जीवन में, प्रत्यक्ष सुधार की अपेक्षा करना स्वाभाविक है। सामाजिक पदानुक्रम में किसी समुदाय की स्थिति उसकी सामाजिक-आर्थिक स्थितियों को निर्धारित करती है, जो व्यक्ति के व्यवसाय पर निर्भर करती है। सामाजिक-आर्थिक स्थिति और

व्यावसायिक स्तरीकरण के बीच एक सीधा संबंध है। हाल के अध्ययनों में इस संबंध को अधिकारों और क्षमताओं के संदर्भ में रेखांकित किया गया है ।

अध्ययन क्षेत्र की जनसांख्यिकी, सामाजिक-आर्थिक एवं पारिस्थितिकीय रूपरेखा और नमूना अनुसूचित जनजातीय परिवारों के बारे में जानकारी, अध्ययन क्षेत्र में आदिवासियों की स्थिति को ठीक से समझने में सहायक होगी। इससे नीति निर्माताओं को नीतिगत निर्णय लेने में उचित मार्गदर्शन प्राप्त करने में मदद मिलेगी, और विकास और विकास की प्रवृत्ति का अध्ययन करने में भी मदद मिलेगी।

आदिवासियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का स्पष्ट आकलन करने के लिए, सीधी जिले के चुनिंदा गाँवों के 400 अनुसूचित जनजाति परिवारों को शामिल करते हुए एक प्राथमिक सर्वेक्षण किया गया। विभिन्न सामाजिक-आर्थिक संकेतकों को ध्यान में रखते हुए, अनुसूचित जनजातियों को मध्य प्रदेश की जनजातीय आबादी का बेहतर प्रतिनिधित्व माना जा सकता है। इसलिए, हमने सीधी जिले को इस अध्ययन का मुख्य केंद्र बनाया है।

प्रस्तुत अध्याय अध्ययन क्षेत्र की जनजातियों की सामाजिक-आर्थिक एवं जनसांख्यिकी स्थितियों से संबंधित है; इस अध्याय में जनजातियों के बीच विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की गई है। इस अध्याय में अध्ययन क्षेत्र के नमूना स्व-नियोजित आदिवासी उद्यमियों के सामाजिक-आर्थिक स्वरूप का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

किसी भी समाज की आय और उपभोग के स्तर और इस प्रकार जीवन स्तर को निर्धारित करने में जनसंख्या महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। नीचे दी गई तालिका विश्लेषण में विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की गई है।

**तालिका 1:** उत्तरदाताओं का लिंग

| लिंग | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|
| पुरुष | 231 | 92.5 |
| महिला | 19 | 7.5 |
| कुल | 250 | 100 |

**स्रोत:** फील्ड सर्वे

तालिका उत्तरदाताओं के लिंग के अनुसार वितरण को दर्शाते हैं। यह देखा गया है कि नमूना संरचना में पुरुष उत्तरदाताओं (92.5 प्रतिशत) का प्रभुत्व है और उसके बाद महिला उत्तरदाताओं (7.5 प्रतिशत) का स्थान है।

## घर का मुखिया

प्रवास के हालिया रुझानों ने जनजातियों में परिवार के मुखिया की अवधारणा को बदल दिया है। परंपरागत रूप से, आदिवासी परिवारों में पुरुष प्रधानता रही है। हालाँकि, हाल ही में, परिवार के पारंपरिक मुखियापन में कुछ आमूल-चूल परिवर्तन हुए हैं। कृषि भूमि की कमी और कई अन्य कारणों से, परिवार के मुखिया अक्सर मौसमी तौर पर अपने पैतृक गाँव छोड़कर अपने कार्यस्थल पर चले जाते हैं। उनकी अनुपस्थिति में, वर्ष के अधिकांश समय में, महिला सदस्य परिवार की मुखिया के रूप में कार्य करती हैं। ऐसे कई महिला प्रधान परिवार हैं।

परिवार के मुखिया की आयु को आर्थिक स्थिति का निर्धारण करने वाला कारक माना जाता है। तालिका परिवार के मुखिया की आयु के अनुसार परिवारों के वितरण को दर्शाती है।

**तालिका 2:** उत्तरदाताओं की आयु

| उत्तरदाताओं की आयु | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|
| पच्चीस तक | 60 | 24.0 |
| 26-45 | 155 | 62.0 |
| 45 से ऊपर | 35 | 14.0 |
| कुल | 250 | 100 |

**स्रोत:** फील्ड सर्वे

तालिका जनजातीय उत्तरदाताओं के आयु के अनुसार वितरण को दर्शाते हैं। यह देखा गया है कि स्व-रोज़गार वाले 24 प्रतिशत नमूने के जनजातीय लोग 25 वर्ष तक की आयु सीमा में पाए जाते हैं, 62 प्रतिशत 25-45 वर्ष की आयु सीमा में और 14 प्रतिशत 45 वर्ष से अधिक आयु सीमा में पाए जाते हैं। इस प्रकार, नमूना जनजातीय उत्तरदाताओं में से अधिकांश अपेक्षाकृत युवा पाए गए।

**तालिका 3:** उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति

| उपजाति | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|
| विवाहित | 244 | 97.5 |
| अविवाहित | 6 | 2.5 |
| कुल | 250 | 100 |

**स्रोत:** फील्ड सर्वे

तालिका उत्तरदाताओं के वैवाहिक स्थिति के अनुसार उनके वितरण को दर्शाते हैं। यह देखा गया है कि अध्ययन क्षेत्र में 97.5 प्रतिशत नमूना उत्तरदाता विवाहित हैं और शेष 2.5 प्रतिशत अविवाहित हैं।

**तालिका 4:** उत्तरदाताओं की उपजाति

| उपजाति | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|
| नायका/डोरे/बेदा | 244 | 97.5 |
| मेदार | 6 | 2.5 |
| कुल | 250 | 100 |

**स्रोत:** फील्ड सर्वे

तालिका उत्तरदाताओं के सामाजिक वर्ग या उप-वर्ग के अनुसार उनके वितरण को दर्शाती है। अध्ययन क्षेत्र में, यह देखा गया है कि नमूना आदिवासी उपजातियों में से 97.5 प्रतिशत नायक/डोरे/बेदा हैं और शेष 2.5 प्रतिशत मेदा हैं।

## सामाजिक-आर्थिक संकेतक

व्यावसायिक गतिशीलता को एक प्रमुख कारक माना जाता है जो लोगों के सामाजिक-आर्थिक जीवन में भारी बदलाव लाता है। अनुसूचित जनजातियों का व्यावसायिक वितरण नीचे दी गई तालिका में दर्शाया गया है।

**तालिका 5:** प्रतिवादियों का व्यवसाय

| पेशा | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|
| कृषि | 179 | 71.5 |
| छोटा व्यवसाय | 30 | 12.0 |
| सरकारी कर्मचारी | 36 | 14.5 |
| अन्य | 05 | 02.0 |
| कुल | 250 | 100 |

**स्रोत:** फील्ड सर्वे

व्यावसायिक गतिशीलता को एक प्रमुख कारक माना जाता है जो लोगों के सामाजिक-आर्थिक जीवन में जबरदस्त परिवर्तन लाता है।
तालिका आदिवासियों के व्यवसाय के अनुसार उनके वितरण को दर्शाते हैं। यह देखा गया है कि अध्ययन क्षेत्र में 14.5 प्रतिशत नमूना जनजातीय उत्तरदाताओं ने सरकारी नौकरी को अपना व्यवसाय बनाया है, 12 प्रतिशत ने लघु व्यवसाय को अपना व्यवसाय बनाया है, 2 प्रतिशत ने अन्य गतिविधियाँ की हैं और अधिकांश उत्तरदाताओं ने कृषि को अपना प्रमुख व्यवसाय बनाया है।

## आय

परंपरागत रूप से, आदिवासी कृषि के माध्यम से अपनी आजीविका कमाते हैं। ज़मीन के अलावा, आय का एक नया स्रोत सरकारी और निजी क्षेत्रों में रोज़गार है। उनमें से बहुत कम लोग तकनीकी रूप से शिक्षित हैं और केवल कुछ ही अच्छी नौकरियों में हैं। तालिका आदिवासी श्रमिक वर्ग की वार्षिक पारिवारिक आय दर्शाती है।

**तालिका 6:** उत्तरदाताओं की वार्षिक आय

| आवास | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|
| 10000 से नीचे | 194 | 77.5 |
| 10001-20000 | 44 | 16.25 |
| 20000 से अधिक | 12 | 3.75 |
| कुल | 250 | 100 |

**स्रोत:** फील्ड सर्वे

तालिका और आंकड़े अनुसूचित जनजातियों के उत्तरदाताओं की वार्षिक आय दर्शाते हैं। लगभग 77.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं की वार्षिक आय 10,000 रुपये से कम है, 16.25 प्रतिशत उत्तरदाताओं की वार्षिक आय 10,001-20,000 रुपये के अंतर्गत है और केवल 3.75 प्रतिशत उत्तरदाताओं की वार्षिक आय 20,000 रुपये से अधिक है।

**तालिका 7:** सीधी जिले में अनुसूचित जनजातियों की ज्ञात भाषा

| आवास | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|
| बघेली | 350 | 87.5 |
| गोंडी | 15 | 3.75 |
| हिंदी | 35 | 8.75 |

**स्रोत:** फील्ड सर्वे

तालिका ज्ञात भाषा स्थितियों के अनुसार जनजातीय उत्तरदाताओं के वितरण को दर्शाते हैं। यह देखा गया है कि 87.5 प्रतिशत नमूना जनजातीय उत्तरदाताओं को बघेली, 8.75 प्रतिशत को हिंदी और केवल 3.75 प्रतिशत उत्तरदाताओं को गोंडी भाषा आती है।

## आवास

सामाजिक-आर्थिक स्थिति के सबसे प्रमुख सूचक, अर्थात् आवास और आवासीय स्थिति पर एक न जर डालने से अनुसूचित जातियों के सामाजिक जीवन की बेहतर समझ प्राप्त होगी।
यह देखा गया है कि अधिकांश अनुसूचित जनजातियाँ ग्रामीण क्षेत्रों में रहती हैं। 1991 की जनगणना के अनुसार, ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले आदिवासी कुल जनजातीय आबादी का 96.5% हैं। जनजातीय समाज के निवास स्थान की स्पष्ट तस्वीर प्राप्त करने के लिए, हमने नमूना परिवारों को निवास स्थान के अनुसार ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में वर्गीकृत किया है। यह वर्गीकरण गाँव में उपलब्ध परिवहन के साधनों (ग्रामीण क्षेत्रों में बस द्वारा और दूरस्थ क्षेत्रों में जीप द्वारा) पर आधारित है।

**तालिका 8:** उत्तरदाताओं का आवास स्वामित्व

| आवास | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|
| अपना | 219 | 87.5 |
| किराए पर | 31 | 12.5 |
| कुल | 250 | 100 |

**स्रोत:** फील्ड सर्वे

तालिका और आंकड़े आवास स्वामित्व की स्थिति के अनुसार जनजातीय उत्तरदाताओं के वितरण को दर्शाते हैं। यह पाया गया कि अधिकांश उत्तरदाताओं, अर्थात् 87.5 प्रतिशत, के पास अपना घर है और शेष 12.5 प्रतिशत अनुसूचित जनजातियाँ किराए के मकान में रहती हैं।

**तालिका 9:** उत्तरदाताओं के आवास का प्रकार

| आवास | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|
| झोपड़ी | 46 | 18.5 |
| अर्ध पक्का | 140 | 56.0 |
| पक्के | 64 | 25.5 |
| कुल | 250 | 100 |

**स्रोत:** फील्ड सर्वे

तालिका जनजातीय उत्तरदाताओं के उनके स्वामित्व वाले घरों के प्रकार के अनुसार वितरण को दर्शाते हैं। यह देखा गया है कि 18.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास झोपड़ियाँ हैं, इसके बाद 56 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास अर्ध-पक्के घर और 25.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास पक्के घर हैं।

## स्वास्थ्य और स्वच्छता

स्वास्थ्य किसी समुदाय की जीवन-स्थिति का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है। स्वास्थ्य विभिन्न समूहों की मृत्यु दर निर्धारित करता है। आमतौर पर, अनुसूचित जनजातियाँ बीमारी के शुरुआती चरण में अपने स्वास्थ्य के प्रति ज़्यादा चिंतित नहीं होतीं। वे केवल अंतिम चरण में ही चिकित्सा उपचार की तलाश करते हैं।
क्षेत्र सर्वेक्षण के दौरान, यह देखा गया कि ज़्यादातर लोगों के घर साफ़-सुथरे दिखाई देते हैं। लेकिन असल में, अनुसूचित जनजातियाँ साफ़-सफ़ाई का ज़्यादा ध्यान नहीं रखतीं। जब शोधकर्ता ने इस बारे में पूछताछ की, तो ज़्यादातर लोगों ने बताया कि पानी की भारी कमी के कारण वे खुद को साफ़-सुथरा नहीं रख पाते। वे अपनी अस्वच्छ परिस्थितियों में रहते हैं जिससे उन्हें एलर्जी और अन्य बीमारियाँ होती हैं।
आदिवासियों में आम तौर पर बुखार, टीबी, हृदय रोग, बदन दर्द आदि प्रमुख बीमारियाँ हैं। आजकल, वे अपनी बीमारियों से तुरंत छुटकारा पाने के लिए एलोपैथी दवाओं की ओर ज़्यादा आकर्षित हो रहे हैं। यह देखा गया है कि आदिवासियों में पेचिश आम है। चिकित्सकों के अनुसार, यह मुख्य रूप से खराब पेयजल के कारण होता है।

नमूना सर्वेक्षण से पता चलता है कि पानी की कमी लोगों के सामने आने वाली प्रमुख समस्याओं में से एक है। नतीजतन, उन्हें पानी लाने के लिए काफी लंबी दूरी तय करनी पड़ती है।

**तालिका 10:** उत्तरदाताओं की स्वच्छता (शौचालय) सुविधा

| शौचालय | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|
| हाँ | 75 | 30 |
| नहीं | 175 | 70 |
| कुल | 250 | 100 |

**स्रोत:** फील्ड सर्वे

तालिका अध्ययन क्षेत्र में स्वच्छता सुविधाओं पर चर्चा करती है। एक प्रमुख मुद्दा यह पाया गया कि अधिकांश उत्तरदाताओं (70 प्रतिशत) के पास शौचालय की सुविधा नहीं थी और 30 प्रतिशत के पास अपने घरों में शौचालय की सुविधा थी।

**तालिका 11:** उत्तरदाताओं के ज्ञान का स्रोत

| रोशनी | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|
| मिट्टी का तेल | 47 | 18.75 |
| बिजली | 169 | 67.5 |
| सौर लैंप | 19 | 7.5 |
| मोमबत्ती | 15 | 6.25 |
| कुल | 250 | 100 |

**स्रोत:** फील्ड सर्वे

अध्ययन क्षेत्र में रोशनी की स्थिति पर चर्चा करती तालिका। अधिकांश उत्तरदाताओं (67.5 प्रतिशत) के घरों में बिजली की सुविधा है, 18.75 प्रतिशत के घरों में केरोसिन की सुविधा है, 7.5 प्रतिशत के घरों में सौर लैंप और 6.25 प्रतिशत के घरों में मोमबत्ती की सुविधा है।

**तालिका 12:** उत्तरदाताओं के जल स्रोत

| जल का स्रोत | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|
| नल का जल | 156 | 62.5 |
| झरने का पानी | 63 | 25.0 |
| कुआं का पानी | 31 | 12.5 |
| कुल | 250 | 100 |

**स्रोत:** फील्ड सर्वे

सरकारी एजेंसियां नल, बोर और कुएँ जैसी जल सुविधाएँ प्रदान करती हैं। परंपरागत रूप से लोग नदी, तालाब और झरने जैसे अपने पारंपरिक जल संसाधनों पर निर्भर थे। गर्मी के मौसम में उन्हें संरक्षित जल प्राप्त करने में भारी कठिनाई होती है क्योंकि कई नदियाँ और तालाब सूख जाते हैं। इसलिए वर्तमान में स्थितियाँ बिल्कुल अलग हैं। तालिका आदिवासियों द्वारा जल सुविधाओं की उपलब्धता को दर्शाते हैं। तालिका दर्शाती है कि नमूने क्रमशः 62.5 प्रतिशत, 25 प्रतिशत और 12.5 प्रतिशत नल के पानी, झरने के पानी और कुएँ के पानी का उपयोग कर रहे हैं।

## निष्कर्ष

इस प्रकार, राज्य और जिले में अनुसूचित जनजातियों पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। जनजातीय समाज के विकास के लिए एकीकृत नीति तैयार करने की आवश्यकता है। चूंकि मध्य प्रदेश जिला लगभग सभी विकास मानदंडों जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, जीवन स्तर, रोजगार के अवसर आदि में पिछड़ेपन के लिए जाना जाता है यह निष्कर्ष निकाला गया है कि अधिकांश उत्तरदाता पुरुष (92.5%), अपेक्षाकृत युवा (86%) हैं, अधिकांश उत्तरदाताओं के लिए कृषि प्रमुख व्यवसाय (71.5%) है, 18.5% और 56% उत्तरदाता क्रमशः झोपड़ियों और कच्चे घरों में रहते हैं, शैक्षिक योग्यता स्कूल स्तर तक है (84.5%), आर्थिक स्थिति खराब है (59%), औसत आय 20000-40000 रुपये (65%), एकल परिवार से प्राप्त (82%), 4-6 सदस्यों के परिवार का आकार (70%), प्रति परिवार स्कूल जाने वाले बच्चों की संख्या शून्य (53.5%), जोखिम लेने का व्यवहार कम (72.5%) है। 220 नमूना उत्तरदाताओं ने बैंक खाते खोले हैं। 78 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास बचत खाते हैं और 22 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास चालू खाता है।

## संदर्भ


1. गांधी म. जनजातीय लोगों के आर्थिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग रिसर्च. 2024;11:26–29।
2. पांडा श, चक्रवर्ती श, घोष ज. पश्चिम बंगाल में जनजातीय लोगों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का खुलासा। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रीसेंट टेक्नोलॉजी एंड इंजीनियरिंग. 2019;8. doi:10.35940/ijrte.D8346.118419।
3. बास्की स. पश्चिम बंगाल के बर्दवान ज़िले में जनजातीय लोगों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर एक अध्ययन। 2016;4:37–45।
4. गिल म. भारत में जनजातीय जनसंख्या की स्थिति। जनसांख्यिकी. 2006;3:91–104।
5. इस्लाम एमए, राय र, कुली एस, ट्राम्बू एम. झारखंड, भारत के वन संसाधनों में रहने वाले जनजातीय लोगों का सामाजिक-आर्थिक और जनसांख्यिकीय विवरण। एशियन जर्नल ऑफ बायो साइंस. 2015;10:75–82। doi:10.15740/HAS/AJBS/10.1/75-82।
6. कुमार अ. हिमाचली जनजातीय समुदायों में सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक चुनौतियाँ। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज़ एंड सोशल साइंस रिसर्च. 2025;7:59–65। doi:10.56293/IJMSSSR.2025.5407।
7. साहू स, मल्लिक प, बांकिरा स, साहू द, साहू स. भारत में जनजातीय शिक्षा: सामाजिक-सांस्कृतिक, संस्थागत और आर्थिक बाधाएँ। शिक्षा अध्ययन के यूरोपीय जर्नल. 2025;12:157–169। doi:10.46827/ejes.v12i8.6120।


**Creative Commons (CC) License**
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.